न्याय दीपिका: बौद्ध प्रमाण लक्षण की परीक्षा

कारिका 24 का तार्किक विच्छेदन - क्या ‘अविसंवादी ज्ञान’ सत्य प्रमाण हो सकता है?

आचार्य धर्मभूषण यति कृत

तर्क, तथ्य और स्वरूप का विश्लेषण

NotebookLM

परीक्षा का उद्देश्य: ‘दुरभिनिवेश’ का निवारण

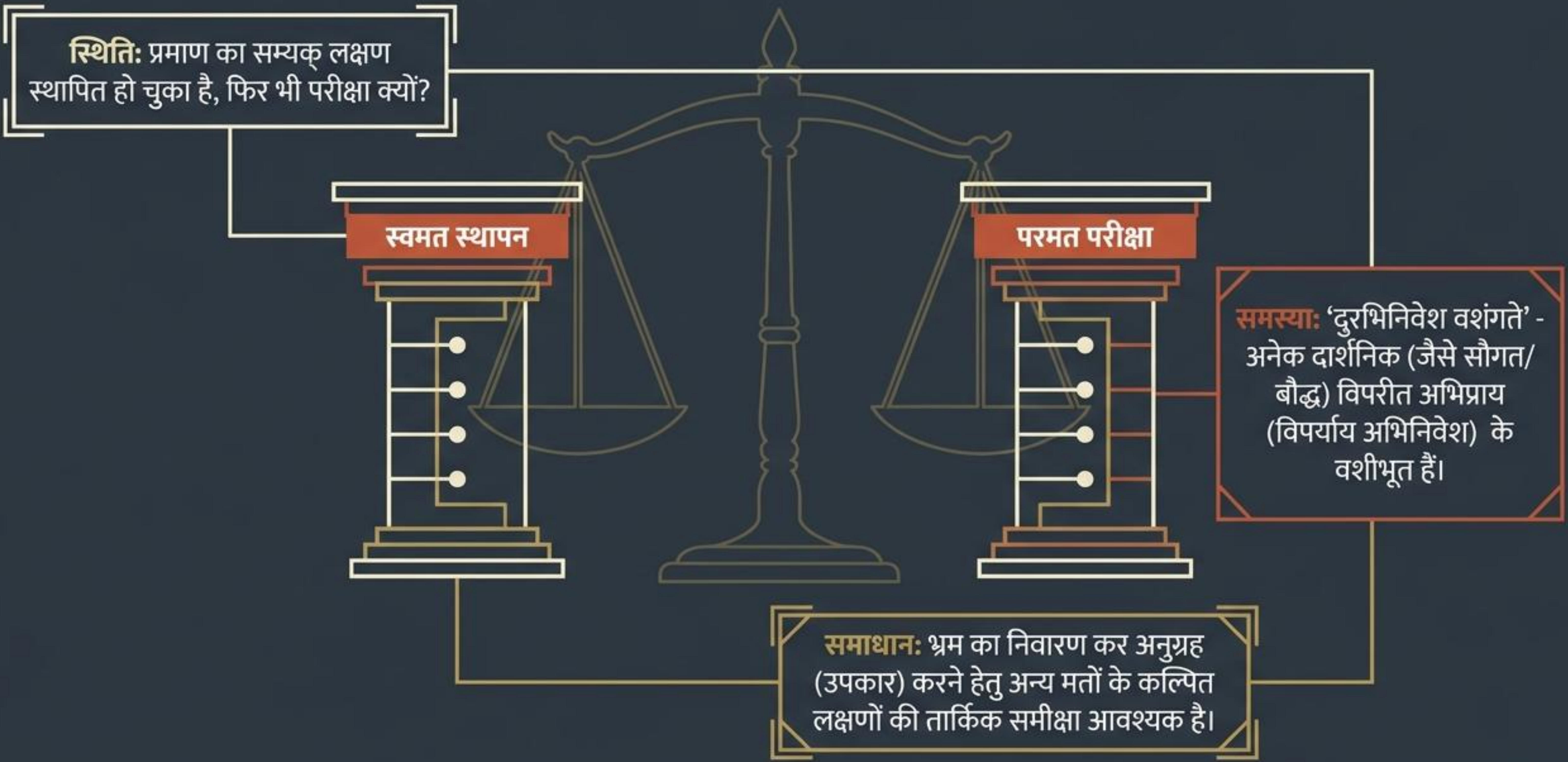

NotebookLM

पूर्वपक्ष: बौद्ध (सौगत) मान्यता

अविसंवादि ज्ञानं प्रमाणम्

(संदर्भ: बौद्ध ग्रंथ - न्याय बिंदु)

अविसंवादि: जिसमें विसंवाद (विपरीतता/झगड़ा) न हो। जो संशय, विपर्यय और अनध्यवसाय से रहित हो।

ज्ञानं प्रमाणम्: वही ज्ञान प्रमाण है।

जैन दृष्टि: प्रथम दृष्टया यह शब्दश: जैनों के 'सम्यक् ज्ञानं प्रमाणम्' जैसा प्रतीत होता है। किंतु, क्या यह लक्षण बौद्धों की अपनी दार्शनिक मान्यताओं पर खरा उतरता है?

NotebookLM

परीक्षण का परिणाम: ‘असंभव’ दोष

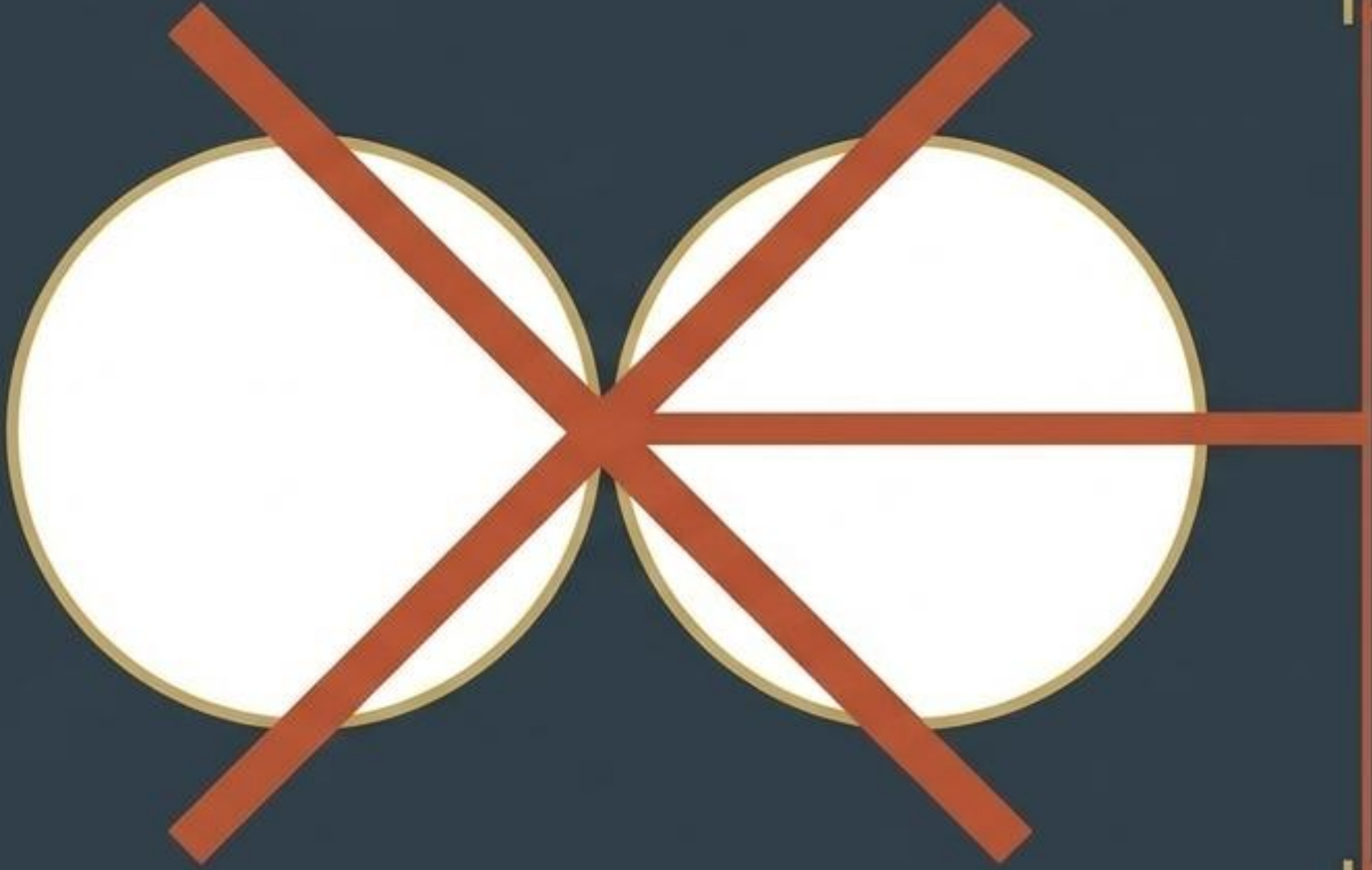

“तत इदं अविसंवादित्वं असंभवित्वात् अलक्षणम्”

1: **दोष क्या है? (Asambhava):** जब कोई लक्षण अपने लक्ष्य में सर्वथा पाया ही न जाए (जहाँ 0% व्याप्ति हो)।

2: **लक्षण:** अविसंवादी ज्ञान।

3: **लक्ष्यग:** बौद्ध दर्शन के दो प्रमाण (प्रत्यक्ष और अनुमान)।

यदि ‘अविसंवादी’ पना इन दोनों ही प्रमाणों में घटित न हो, तो यह लक्षण असंभव सिद्ध होकर ध्वस्त हो जाएगा।

NotebookLM

बौद्ध ज्ञान मीमांसा के दो स्तम्भ

प्रत्यक्ष (Perception)

स्वरूप: निर्विकल्प (बिना किसी विकल्प, नाम या भेद के जानना)।

विषय: स्वलक्षण (क्षणमात्रता / momentary existence)।

अनुमान (Inference)

स्वरूप: सविकल्प (विकल्प और भेद सहित जानना)।

विषय: सामान्य - अन्यापोह (अन्य का अभाव / exclusion of others)।

NotebookLM

स्तम्भ 1 की समीक्षा: प्रत्यक्ष में 'निर्विकल्पता' का संकट

कदम 1: बौद्ध प्रत्यक्ष पूर्णतः निर्विकल्प है। (यह केवल सत्ता मात्र को ग्रहण करता है)।

कदम 2: अतः यह स्व-विषय का अनिश्चायक है। (यह निर्णय नहीं कर सकता कि वस्तु 'ऐसी ही है')।

कदम 3: जो निश्चयात्मक नहीं है, वह संशय आदि का विरोधी नहीं हो सकता (समारोप विरोधित्व अभावात्)।

निष्कर्ष: जहाँ निश्चय नहीं, वहाँ 'अविसंवाद' कैसे हो सकता है? प्रत्यक्ष में अविसंवादी लक्षण घटित नहीं होता।

NotebookLM

प्रत्यक्ष की विफलता का मूल: सर्वं क्षणिकं

बौद्ध सिद्धांत

वस्तु मात्र क्षणिक है। स्वलक्षण का अर्थ है वस्तु की 'क्षणमात्रता' (एक पल की सत्ता)।

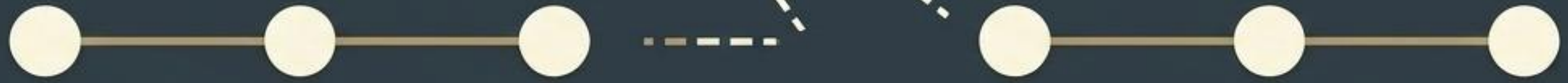

तार्किक बाधा

सत्य ज्ञान (अविसंवाद) के लिए ज्ञान का स्थिर होकर विषय का निर्णय (ज्ञप्ति) करना आवश्यक है।

परिणाम | जब वस्तु भी क्षणिक है और ज्ञान भी उसी क्षण नष्ट हो रहा है, तो निश्चय कौन करेगा? बिना निश्चय के प्रत्यक्ष केवल अनध्यवसाय (अज्ञान) रह जाता है।

NotebookLM

स्तम्भ 2 की पृष्ठभूगि: अनुमान और 'अन्यापोह'

बौद्ध 'अनुमान' का विषय '**सामान्य**' है।

बौद्धों का 'सामान्य' जैनों के 'सत्' से भिन्न है। इसे **अन्यापोह** (अन्य-अपोह) कहते हैं।

अर्थ: **अन्य का अभाव**। 'यह घट है' का अर्थ है 'यह वह सब नहीं है जो अ-घट है'।

यह वस्तु के सकारात्मक (सत्) स्वरूप को नहीं, मात्र **निषेध (अभाव)** को ग्रहण करता है।

NotebookLM

स्तम्भ 2 की समीक्षा: 'अपरमार्थ' का विषय

अपरमार्थ भूत सामान्य गोचरत्वात्

[काल्पनिक विषय] + [ज्ञान] = [असत्य ज्ञान]

स्वीकृति

बौद्ध स्वयं मानते हैं कि यह 'सामान्य' (अन्यापोह / संतति) अपरमार्थ भूत (काल्पनिक/असत्य) है।

विरोधाभास

अनुमान ज्ञान इसी अपरमार्थ (झूठे/काल्पनिक) विषय को ग्रहण करता है।

निष्कर्ष

जब अनुमान का विषय ही असत्य और परिकल्पित है, तो उसे जानने वाला ज्ञान 'अविसंवादी' (सत्य/विपरीतता रहित) कैसे हो सकता है?

NotebookLM

सिद्धि: असंभव दोष का चक्र

लक्षण: अविसंवादी ज्ञान

लक्ष्य 1 (प्रत्यक्ष)

↓

निर्विकल्प होने से अनिश्चायक है।

↓

अविसंवाद नहीं है।

लक्ष्य 2 (अनुमान)

↓

अपरमार्थ विषयक (काल्पनेक) होने से असत्य है।

↓

अविसंवाद नहीं है।

जो लक्षण न प्रत्यक्ष में घटित हो, न अनुमान में, वह असंभव दोष से दूषित है।
अतः बौद्धों का प्रमाण लक्षण तार्किक रूप से पूर्णतः अलक्षण सिद्ध होता है।

NotebookLM

जैन सिद्धांत: ज्ञान निश्चयात्मक ही होता है

स्व-अपूर्व-अर्थ व्यवसायात्मकं ज्ञानं प्रमाणम्

- सत्य ज्ञान का स्वभाव ही ‘निश्चयात्मक’ (व्यवसायात्मक) होना है।

- मात्र जान लेने (निर्विकल्पता) से प्रमाणता सिद्ध नहीं होती। जब तक ज्ञान ‘यह ऐसा ही है’ ऐसा निश्चय नहीं करता, अज्ञान नष्ट नहीं होता।

- वस्तु ‘अन्यापोह’ (अभाव) रूप नहीं, अपितु सत् स्वरूप है (‘सद्रव्यलक्षणम्’)।

NotebookLM

जीवन में प्रायोगिक फल: धारणा बनाम अनुभूति

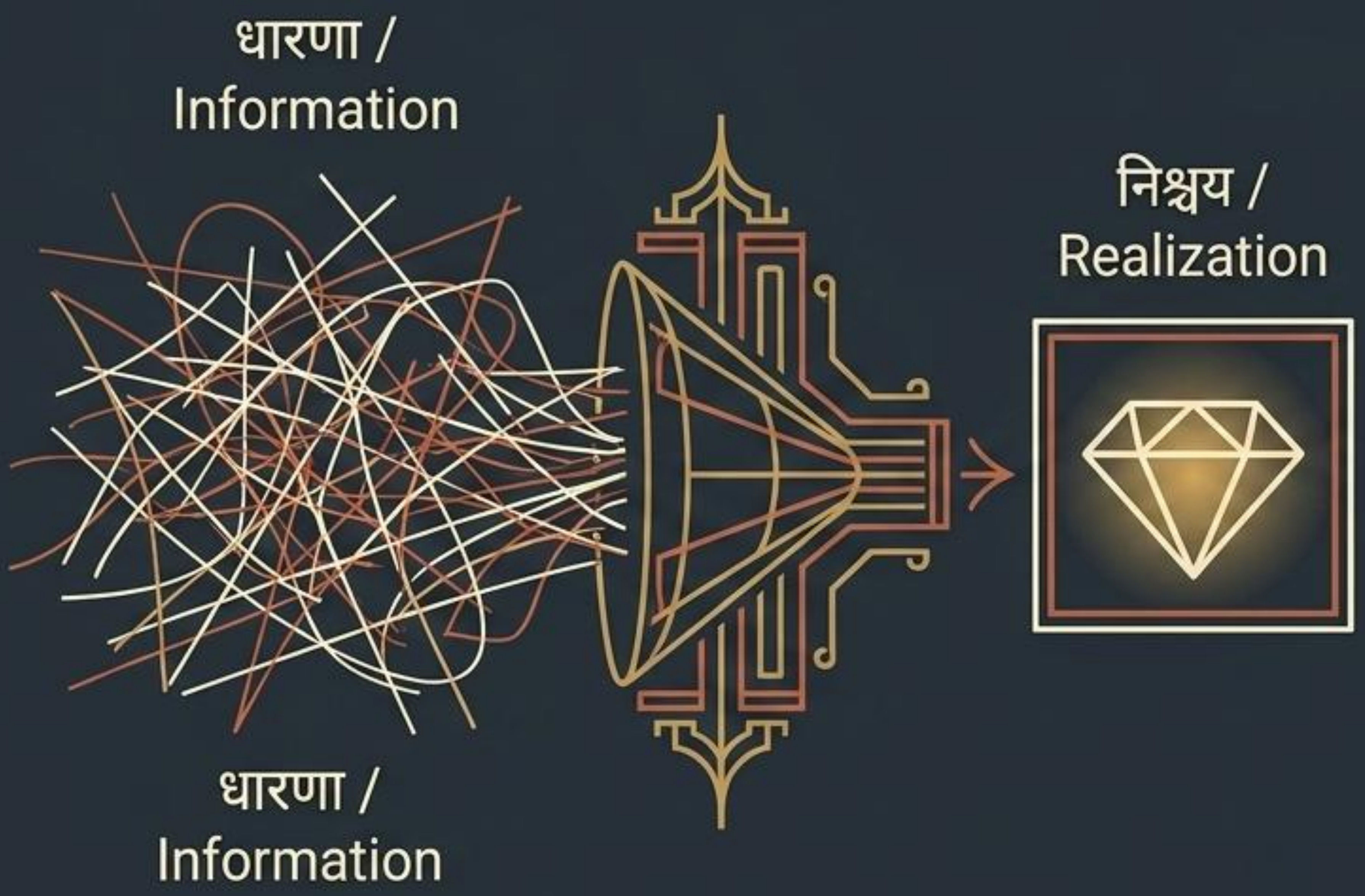

1. जानकारी प्रमाण नहीं: प्रवचन सुन लेना या धारणा बना लेना प्रमाण नहीं है। जब तक आत्मा के सुख स्वरूप का निश्चय न हो, ज्ञान अविसंवादी नहीं होता।

2. क्षणिकता के भ्रम से मुक्ति: वस्तुओं को सर्वथा क्षणिक मानकर सत्य की खोज नहीं हो सकती। वस्तु नित्य-अनित्य (परिणमनशील) स्वरूप है।

3. तृष्णा का नाश: बिना सम्यक् निश्चय (अविसंवाद) के विषय भोगों में मात्र तृष्णा बढ़ती है ('ते उदिप्न-तण्हा दुक्खा')। सम्यक् निर्णय से ही अहम और दुख का विसर्जन होता है।

NotebookLM

उपसंहार

शब्दों की समानता (अविसंवादी) मात्र से सत्य सिद्ध नहीं होता; दर्शन की गहराई (संदर्भ) आवश्यक है।

बौद्ध का 'अविसंवादी' ज्ञान उनके 'क्षणिक' और 'निर्विकल्प' ढांचे में एक असंभव कल्पना मात्र है।

सत्य ज्ञान निश्चयात्मक, अन्वय-सहित और वस्तु के 'सत्' स्वरूप को ग्रहण करने वाला होता है।

नमो जिणाणं

NotebookLM